८

समावेशीकरणको दिशामा एउटा फड्को :
गोरखापत्रद्वारा प्रकाशित मारवाडी भाषा पृष्ठ
•
बि.सं. २०६५ पुस २० गते आइतबार

गोरखापत्र
नयाँ नेपाल

जोगलिखि बिराटनगरसूं-३

लक्ष्मण नेवटिया-विराटनगर

नेपाल मांय मारवाडी समाज कै सामनै आज नुवीं नुवीं चुनौतियां आरै है । आजतक यो समाज हरेक चुनौतियां को हिम्मत सूं सामनो करतो आर्‌यो है । आगै भी आपकी सुझबुझसूं इण चुनौतियां को सामनो करनै मांय सफलता प्राप्त करसी यो विश्वास कर्‌यो जा सकै है । दही खानै को कोड है तो दुध म जावणं भी आपाणै देनो पडसी । अचाणचक कोई चमत्कार हुनै वालो नहीं है । ठोस सोचको कार्यन्वयन समय की मांग है ।

आज आपणै सामनै एक प्रमुख चुनौती है खुदकी सुरक्षा की । आपाणै सगली सरकारी निकायां सुरक्षाको भरोसा देवै पण सुरक्षा कोनी दे पार्‌या है । अंको मुख्य कारण है बै बोलै कुछ और है । पण आपणै बारे में जो बोलै बो सोच कोनी अर जो सोचै बो हुवै कोनी । सोच बदलनो बै चावै कोनी या बात भी नहीं है । पण पुरानी सोच की जडा इतनी गहरी गडेडी है कि बा निकल कोनी पा री है । हरेक वर्ग कै लियै सबस्यूं सरल गन्तव्य आपां होर्‌या हां । नेता, सरकारी अफसर या अन्य कोई भी हो आर्थिक प्राप्ति जितनी जल्दी आपनैसूं बनानै मिल सकै बिति केंसुभी कोनी मिल सकै । यो ही कारण है कि लहू की घूंट पी कर भी कनै भी बेरो नै देकर हजारां लाखां रुपिया क नीचै आपां आर्‌या हां । थारी सुनकै म राजी हो ज्याऊँ । म्हारी सुनै थे राजी होजाओ । पण य स्थितिसूं निकलणै का कोई ठोस रास्तो कोनी दिख र्‌यो है । सगला लोग रोज आपाणै नुवा उजासको भरोसो दिलावै । सगलाकणै मिश्रीसी मिठी बातां आपणै वास्तै है पण वास्तविकता घणी पाछै है । स्थिति में बदलाव आवण में समे लागतो दिसै है ।

मिनख रो तुलनात्मक सोच भी विकास को अर प्रगतिको मापदण्ड बणै है । ईं हिसाबसूं थोडी सकारात्मक सोच बनायां उणियारो थोडो मुलकण लागै पण इतनै में मोबाइल की घंटी बाजै और बा मै अपरिचित नम्बर देखतां ईं माथै में सलवटां पडण लागजावै । य पीडासूं कोई थोडा कोई जादा आपां सगला ही पीडित हां । पण रोवां तो के कै सामणै । बोलां तो कं के सामनै ।

इणं सवालां रा पडूत्तर अेक नुवो अरथ देवै कि अब आपाणै आपणी समझ री गैराइ ने और उण्डी करनी पडसी । दस जगां खाडा खोद्‌यां कुवों कोनी खुदणो है । आपसी एकता कै धरातल पर एक ही जंगा सारो बुद्धि विवेक को प्रयोग करकै अटूट रुपस्यूं कुवो खोदांगा जद ही उपलब्धी कै पानी का दर्शन हो पावैला । नहीं तो रेगिस्तान की हिरणी की तरयां, जंगा जंगा आपां भी पानी खोजता रेजावांला अर लोग रोज आपणो फायदो उठाता रवैगा । आपांनै बो रास्तो खोज निकालनो है जो सही अर्थ मांय आपांणै आपनै वास्तविक लक्ष्य तक पुगासकै । आपानै स्वयंसूं स्वयंको साक्षात्कार करकै आपकै भितर लुकेडी कमीयां न निकालनी है । गडबडियां न ठिक करनी है और सागै सागै आपकी कमी को दोष दूजां नै देनै की भूल भी नहीं करनी है । या हुयां इ आपां सगलां की श्रद्धा अर प्यारका हकदार हो सकांगा । आपकी मंजील नै प्राप्त करनै को मारग प्रशस्त कर सकांगा ।

आज तथ्यां कै विश्लेषण की आवश्यकता है । आपां यदि दूजां नै बदलेड़ो देखणो चावां तो आपां खुद न भी समयसारुं बदलनो पडसी । मं एक बात फेर लिखनी चाहर्‌यो हूँ कि आपां आपणी माटीकी सुगन्ध न नहीं भूलां । हरेक करम मांय माटी न साक्षी राख कर बो ही काम करां जकंस्यूं आपनो समाजको नाक ऊँचो हुवै । जो आपकी माटी न भूल गयो बो खुद आपणै भूलग्यो । या बात नै हिवड में संभालकर आगै बढणों है । आपां एक जिम्मेवार कौम हां अर राष्ट्र कै प्रति समयसारुं जो भी आपनी जिम्मेवारी बन पडै है बनै पूरी करनै मांय आपां के सूं भी पाछे कभी भी कोनी रैया आगै भी नहीं रेवांग यो आपां गर्व अर दृढ विश्वास कै साथै बोल सकां हां । बांकी तो आगै समय ही बतावैगो ।

नदी की जीवन (जातरा का तीन पडाव हुवै है पहाड, मैदान अर समुदर । पहाड में नदी नवयौवना की भाँती बालपणो दरसावती उछले कुदे, बडी हुवै, कल कल, छल छल करती गीत गावै अर मैदान में आवता मर्यादा रा तटबन्धन स्वीकार कर लेवै, चाल धीमी पडजावै, जिम्मेवारी निभावती बैवती रैवै अर बुढापा री भांती समुदर में समाय जावै । या अेक शाश्वत सोच नै विचारतां स्वीकारतां मन भविष्यगत कल्पना में डुबग्यो की आपां इबार किसै पडाव पर हां । समावेशिकरण की बातसूं तो आपां पहलै पडाव पर हां जठै सम्मान की रक्षा करण को पूरो पूरो भरोसो सगलै राजनैतिक दलांसूं आपाणै मिलर्‌यो है पण जो शंका मन मै पल रही है डर लागै खटै आपां कोई नुवा मायाजाल मैं नही फंसजावां । अंकै वास्तै आपाणै सजग रहनो जरुरी है ।

कमी खाली दूसरां में है या बात भी कोनी है । आपां भी खुद आपनी खुद की उलझ्‌याएडी गांठा में खुद उलझगा हां । अन्तर की आँख्यासूं झांक्‌या सारी सच्चाइ साफ साफ निजर आवैगी । खाली दूसरां नै दोष देनसूं जी नै राजीकरल्यो । कुछ ठोस उपलब्धी तो हुणै वाली है कोनी । अंकै वास्तै म्हारो सगला समाज कै बन्धुवांसूं यो विनम्र अनुरोध है कि आपां आपणै अति व्यस्त इ नहीं अस्त व्यस्त समयसूं थोडो समय आपणी खुदकी कमीयां न मिटाणै में लगावां जसूं समाज अर राष्ट्र क हित मे आणैवाली चुनौतियां रो आपां डटकर मुकाबलो कर संका । यो ही आज आपणो कर्त्तव्य है । या ही समय की मांग है । और एंसू ई आपणो आगै को मारग सुगम बण सकैगो । यो एक महताऊ काम आपाणै पूरो करणो है । अन्यथा आनै वाली पीढि आपाणै माफ कोनी करैगी । तागत आपनै मांय है, बसबणै जान नै की जरुरत है किसतुरी मिरग की सुंडी म रेवै अर बो सारै जंगल मांय किसतुरी खोजतो फिरै उयां ही आपनी तागत आपनै मांय है । बस बनै जानणै की जरुरत है अर जरुरत है उपयोग म ल्यावण की । यो एक भोत इ महत्वपूर्ण कालखण्ड सूं आपां गूजरर्‌या हां । हाथ पर हाथ धर कै बेठ्या तो आपां कठै का भी कोनी रेवांगा । अंकै वास्तै समाज की सगली संस्थावां नै, नेतृत्ववर्ग नै सक्रिय होकर आगै बननै वालै /संविधानू में आपणै हक हित कर्त्तव्य अर अधिकार को समुचित्त समावेश करनो पडैगो जद ही समावेशिकरण शब्द साकार हो पावेलो । नही तो चैरो उदास कर होठां माथै जमेडी पार्पाडिया रगडता रै जावांला । आपां सदा सूं अग्रणि रहयां हां ईं काम मे भी आपां ने पूरो पूरो समय देकर देश अर समाज के हित मे ठोस सुझाव देकर आपनी विवेक की ताकतको सदुपयोग करनो है । कठै यो नही सुननी पड जावै कि आ बात कयां हुयगी ? फेर तो एक ही बात रैजावैगी/फेर पछ्‌यायां होसी कांइ, जब चीडकली चूगगी खेतू ।

मारवाड़ी दोहा

संकलन-श्रीमती गोमती राठी, बिराटनगर-४

गजानन्द गिरजा सुवन, सदा सुहाणा भेश ।
सारां पेली सुमरिए, गौरी पुत्र गणेश ॥

जननी जने तो भक्त जन, के दात्ता के शूर ।
नीं तो रीजे बाँझडी, मती गमाजे नूर ॥

तरवर सरवर सन्त जन चोथो बरसे मेह ।
परमारथ के कारणे, चारुं घारी देह ॥

देख पराई चोपड़ी, मत ललचावे जीव ।
सूका पाका खांयकर, ठण्डो पाणी पीव ॥

उलटी गत गोपाल की, किया उलट का फेर ।
काबुल में मेवा कर्‌या, कर्‌या बिरज में केर ॥

मन लोभी, मन लालची, मन चंचल, मन चोर ।
मन के मते न चालिए, पलक पलक मन ओर ॥

जुर, जाचक अर पावणा, आवे बारम्बार ।
लंघण तीन कराय दे, फेर न आवे द्वार ॥

बुधजन कदे न छोडिए, निज पुरखन की रीत ।
बराबरी में कीजिए बैर, ब्याह और प्रीत ॥

राजा जोगी अगन, जल याँकी उल्टी रीत ।
डरता रीज्यो परसरामजी, थोड़ी पाले प्रीत ॥

तीतर पंखी बादली, विधवा काजल रेख ।
बा बरसे, बा घर करे , इस में मीन न भेष ॥

मोरां बिन डूँगर किसा, मेह बिन किसा मल्हार ।
तिरिया बिन तीजाँ किसी, पिव बिन किसा सिंगार ॥

शंख-ध्वनी सं रोगां कां नाश

१९२८ ई. मं वर्लिन विश्व विद्यालय नं शंख-ध्वनीकां अनुसन्धान करके सिद्ध करिइगयो है कि शंख-ध्वनी के तरंगा से वैक्टीरिया ने नाश करने की क्षमता राख है ।
प्रति सेकेंड सत्ताईस घन फुट शक्ति क जोरा से बजायो गयो शंख २२०० फुट दुरी के बैक्टोरिया ने नाश करदेव है । और २६०० फुट के दुरी तक शंख कि ध्वनी से वैक्टोरिया बेहोस हो जाव है ।
वैक्टोरिया के अलाव हैजा, मलेरिया का कीटाणु भी नास हो जाव है । शंख कि ध्वनी से आसपास कि जगह का किटाणु भी नास हो जाव है । मिर्गी, कण्ठमाला और कोढ के रोगियो के भित्तर शंखध्वनी की प्रक्रिया रोगनाशक है । शिकागो, अमेरिका मे डा. डी. ब्राइन मं अवतक १३०० बहरे रोगियो मं शंख कि ध्वनी सं ठीक करिइया है ।

संकलन - प्रदिप शर्मा

"विशेष अनुरोध"

आपां सगला लोगां के लिए खुशी कि बात है कि पिछला तीन महिना स राष्ट्रिय दैनिक पत्रिका गोरखापत्र मं महिनाको एक बार भित्तर को पुरो एक पृष्ठ मारवाडी भाषा मं प्रकाशित होतो आरहयो है । या आपन सभी लोगां क लिए गर्व कि वात हं ।

"मारवाडी भाषा मं मारवाडी समुदाय को गरिमाय इतिहास, मारवाडी समुदाय का लोगा कं द्वारा कररो धार्मिक, सामाजिक सेवा कार्य क बारे मं और आपनो संस्कृति-संस्कार, शैली आपनो पहचान और धार्मिक अध्यात्मिक राजनैतिक, विचारिक लेख रचना, कविता उपलब्ध करान कं लिए आप सगला लोगों से अनुरोध हे । जिस सं गोरखापत्र मे मारवाडी भाषा मं प्रकाशित पृष्ठ निरन्तर रुप सं प्रकाशन होतो रहव ।

आप लोगा से पुनः अनुरोध है मारवाडी भाषा मे लिखीरी लेख रचना कविता निम्न ठिकानों मे उपलब्ध कराकं यस समावेसीकरणको अभियान मं सहयोग करो ।

संयोजक
मदन मित्तल
फोन : ४२२७०९०
इमेल : khatu@wlink.com.np

बिराटनगरको अतिथि सदन : नेपालको गौरव

भीखमचन्द सरल
का.का. सदस्य, नेपाल राष्ट्रिय मारवाडी परिषद

नेपाल में मारवाड़ी को आगमन लगभग दो शताब्दी पेलां हुयो थो । शुरु का सौ वर्ष तो उनांनै व्यक्तिगत रुपसुं स्थापित होनै मांयही लागग्या । बादका सौ वर्षा में मारवाडी लोग विभिन्न धार्मिक सामाजिक कृयाकलापां वास्त संगठित रुपसूं सार्वजनिक कामां में आगै आया । मारवाडी समाज संस्कारत : धार्मिक, दयालु, व सेवा भावी प्रवृतिका होवै है या बात जगजाहिर है । उनकै लिय पूजापाठ कै साग दान पुण्य भी धर्मकी परिभाषा में आवै है । सेवा ही परमो धर्म : सिद्धान्त न मानता हुया मारवाड़ी समाज प्राचीन कालसूं ही कुवा, बावडी, धर्मशाला, स्कूल, श्मसानघाट आदि निर्माण करन में आगै रहयो है । गाँवघर में लोगां कै सुख दुख में सामेल होनो य समाजको स्वभाव है अंसै कोई उपकार भाव या अहंकार भाव उनाकै मन में कोनी आवै ।

२०४५ सालमें धरानको भूकम्प, २०६५ को कोशीको बाढ आदि में मारवाडी समाज द्वारा करेड़ा सेवाकार्य सर्वत्र प्रशंसनीय रहया है । काठमाण्डू में काफी पेलां मारवाड़ी सेवा समिति (धर्मशाला) की स्थापना हुई जिसकी निरन्तर सेवा नेपाल-भारत सर्वत्र स्तुत्य है ।

बिराटनगर कै व्याह शादियां में बरात गोदामां या स्कूलां में ठहरांनै की व्यवस्था होया करती थी । उस वक्त लड़की की शादीमें बारात लेकर आनै को चलन थो । आजकल ठीक उल्टो हो रहयो है । विरादरी का लोग महिना भर पहलांसू फलाना की बेटीको व्याह है बोल कर तैयारी में लाग जाता हा । घर घरसूं सामान (कपड़ा लता, वर्तन, चौकी, दरी, जुटाकर जनवासा में भिजवाता हा । बाद में बिराटनगर का मारवाडी बन्धुआं म विवाह शादी, बरात ठहरान वास्तै सार्वजनिक धर्मशाला की कमी मेसुस हुनै लागगी । समाजका अग्रणी मान्यजना में चिन्तन मनन शुरु होयो । होली दिवाली मिलन समारोहां म चर्चा परिचर्चा होन लागी । स्वनाम धन्य कालुरामजी अग्रवाल, (तोदी) रामाकिसनजी राठी, सेठ रामलालजी गोल्छा, मदनलालजी अग्रवाल, भैरुंदानजी लुणिया, तोलारामजी दुगड, श्रीबल्लभजी लखौटिया, पं जगन्नाथजी शर्मा आदि सकृय होया । वि. सं. २०१६ साल में मारवाडी समाजकी वृहत सभा होइ । सभा में बजार कै बीच में धर्मशाला बनानै को निर्णय लियो गयो । बजार कै बीच में जग्गा खरीद करी गई । जग्गा को कब्जो दिलान में मारवाडी समाजका शुभचिन्तक पूर्व प्रधानमंत्री मातृका प्रसाद कोइरालाजी को उल्लेखनीय सहयोग रह्‌यो । यो समाज उनांको ऋणी है । मारवाडी समाज कै सभी जातियां क इच्छुक बन्धुवांको चन्दो लियो गयो । कुल २४८ जना चन्दा दाताको नाम आज भी सदनकी शिलालेख मै अंकित है । वि. सं. २०२४ साल म कालुरामजी अग्रवाल(स्व.) द्वारा मारवाडी समाजकी सार्वजनिक धर्मशालाको शिलान्यास सम्पन्न हुयो । निर्माण कार्य सुसम्पन्न करान वास्त वरिष्ठ समाजसेवी श्री तोलारामजी दुगड (नेपाल राष्ट्रिय मारवाडी परिषदका वर्तमान अध्यक्ष) कै संयोजकत्वमें निर्माण समितिको गठन कर्‌यो गयो । वि. सं. २०२७ साल फाल्गुन १४ गते कै शुभ दिन तत्कालिन राजा स्व. महेन्द्रद्वारा विशाल अतिथि सदनको उद्‌घाटन सम्पन्न होयो । निर्माण कार्य मै इन्जिनियर रमाकान्त झाजी तथा खेतुलालजी अग्रवाल को उल्लेखनिय सहयोग प्राप्त होयो थो । प्रथम कार्य समितिका अध्यक्ष कालुरामजी अग्रवाल नै बनायो गयो । बाद में क्रमश : रामाकिसनजी राठी, हँसराजजी गोल्छा, मदनलालजी अग्रवाल, आशकरणजी राठी, तोलारामजी दुगड, ताराचन्दजी खेतान, गंगाविसनजी राठी अध्यक्ष कै गरिमामय पद म रहकर सदन की सेवा करी । वर्तमान में श्री रायचन्द वैद सदनका अध्यक्ष है । सदन क सदस्यां द्वारा निर्वाचित व पदेन समेत ३१ जनाकी कार्य समिति की व्यवस्था है । समय सारु बिराटनगर कै विकास व जनसंख्या कै चाप कै कारण सदन छोटो पड्‌न लाग्यो और २०६१ साल में दो तल्ला वाला मुख्य भवन कै उपर एयर कंडीसन्ड आधुनीक सुविधा युक्त तिसरो तल्लो थपिजग्यो । जिकारो उद्‌घाटन तत्कालिन प्रधानमंत्री सम्माननीय शेरबहादुर देउवा कै द्वारा सम्पन्न होयो ।

२०५२ साल म २५ वर्ष पूरा होन कै उपलक्ष्य में सदनकी रजत जयन्ती भव्य रुपसुं मनाइ गई । सदन म रामकुंज, श्यामकुंज, राधाकुंज, सीता कुंज, गौरी कुंज, शिवकुंज एवं शितल निवास समेत सात खण्ड है । एक दिन म सात व्याह करनकी सुविधा उपलब्ध है । सदन में कुल ४ हाँल समेत ७५ कमरा व दुकान है । शितल निवास को हाल न बिराटनगरको सबुसूं बडो हाँल मान्यो जाव है । बिराटनगर उप महानगरपालिका वार्ड नं. ९ मेनरोड म लगभग १९ कट्टा जग्गा म स्थित अतिथि सदन नेपाल में ही नही भारतकै विहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश, जिसा सीमावर्ती प्रान्तां म मारवाड़ी समाजको ही नही नेपाल क गौरव कै रुपमें खड़यो है ।

सदन क ठीक सामन वि. सं. २००२ साल म निर्मित श्री सत्यनारायण मन्दिर समाजको गौरव अर सदनकी गरिमा म चार चाँद लगावै है । मारवाड़ी सेवा समितिद्वारा आयोजित कार्यक्रमा मै निःशुल्क भौतिक साधन उपलब्ध करान कै साग ही व्याहशादी, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, प्रशिक्षण कार्यक्रमां मै "पहलां आवो पहलां पावो" कै नियमानुसार बिना भेद भाव सभी समाज न स्थान उपलब्ध करान की व्यवस्था शुरुसूं ही निर्विवाद रुपसूं चाल रै है । धन्य है य संस्था के परिकल्पनाकारक कै साथै साकार रुप देणियां समाज का बन्धुगण ।

युवा जागो

रचना : पवन कन्दोई
बिराटनगर

हे नवयुवक समाज का , म्हे थानै जगानै आयाँ हाँ,
जो फैल रै है गन्दगी, म्हे बनै हटानै आयाँ हाँ,

भुल गया आपाँ के हाँ, फैशन म जान लगावाँ हाँ,
रुपिया की बर्बादी करकै, तिरस्कार ही पावाँ हाँ,
भूल्या भटकेडा भाया नै, आदर्श सीखान आयाँ हाँ,
जो फैल रै है गन्दगी, म्हे बनै हटानै आयाँ हाँ ॥१॥

लक्ष्मी पुत्र र्‌या सदा, लक्ष्मी की लाज बचानी है,
जठै भी होवै शुभकार्य, लक्ष्मी नै बठै लगानी है,
माँ लक्ष्मी बरदान दिया, बो याद दिलानै आयाँ हाँ,
जो फैल रै है गन्दगी, म्हे बनै हटानै आयाँ हाँ ॥२॥

स्याणाँ बन कै घर-समाज, अर देश की शान बढानी है,
जठ भी आपाँ रेवाँ हाँ, धरती की लाज बचानी है,
आज सगला कै मनमन्दिर में, ज्योत जलानै आयाँ हाँ,
जो फैल रै है गन्दगी, म्हे बनै हटानै आयाँ हाँ ॥३॥

युवा सजग रहवै तो, आग की पीढी नै के भारी,
कुण झुका पावलो, ई शक्ति म काँई लाचारी,
लोगां र मन को यो, कालो गगन हटानै आयाँ हाँ,
जो फैल रै है गन्दगी, म्हे बनै हटानै आयाँ हाँ ॥४॥

नयाँ नेपालको भोलिको अङ्क *बज्जिका* भाषामा प्रकाशित हुनेछ ।

पृष्ठ तथा फोटो संयोजक : मदन मित्तल
पत्राचार ठेगाना : नयाँ नेपाल, गोरखापत्र दैनिक, पो.ब.नं.२३ काठमाडौं
E-mail:gopabahubhasa@mail.com.np